गुजरात का संत साहित्य - डॉ. रानू मुखर्जी

संतो का सहित्य कोई मत या सिद्धान्त न होकर स्वानुभूति को व्यक्त करनेवाले, श्रेष्ठ सदाचारी, समाज मे सामान्य स्तर रखनेवाले और सामाजिक उत्थान के समर्थक ऐसे लोगों की संज्ञा है जो ढोंग और दिखावे मे विश्वास नहीं करतें हैं ! "संत" शब्द अत्यंत व्यापक और सात्विक जीवन पर विश्वास करनेवालों लिए प्रयुक्त किया जाता है ! इनके अनुसार जीवन का उद्देश्य परमात्मा में लीन होकर एसी स्थिती प्राप्त करना जहा बुद्धतत्व के अतिरिक्त स्थिति जगत तत्व का कुछ भी ध्यान नहीं रह जाता है और यह स्थिति उन्हे गुरुकृपा से प्राप्त साधना-पथ द्वारा ही मिलती है !

समग्र भारतवर्ष के भक्ति आंदोलन के भूल में एक समान पृष्ठभूमि देखी जा सकती है ! मध्ययुग में बार - बार होते विदेशी आक्रमणों के कारण प्रजा धर्म एंव संस्कृति के संदर्भ में स्वयं को असहाय एंव असुरक्षित पाती थी ! पर अन्दर से उसी के जतन रक्षण में प्रयत्नशील थी ! इस विकट स्थिति में भक्तों - संतों ने ब्राह्मण कर्मकांडियों के बीना ही ईस्वर एंव साधारण मानव का संबंध स्थापित किया ! जन समाज को सहज ईश्वर भक्ति का अधिकारी बनाया !

उत्तर मे आबू से दक्षिण में दमणगंगा तक और पूर्व दाहोद से पश्चिम मे द्वारका तक फैले हुए गुजरातीभाषी प्रदेश को 'गुजरात' कहा जाता है ! गुजरात प्रान्त भाषा और साहित्य विषयक औदार्य के लिए सदैव उल्लेखनीय रहा है तथा धर्म साधना के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही अग्रगण्य रहा है ! यहा के कवि मनीषियों का धार्मिक विचार इतना गूढ और महत्वपूर्ण था कि भारत संसार में धर्म के पथप्रदर्शक के रुप में ख्यात हो गया ! केवल ज्ञान और उपदेश के द्वारा नही अपितु रचना प्रक्रिया के द्वारा भी जनता में धार्मिक भाव को निरपेक्ष भाव से स्थापित किया ! अध्यात्म और दर्शन जैसे गूढ विषयों को सुंदर ढंग से वर्णन करके जनता में धर्म के प्रति जागृति जगाने का महत् कार्य गुजरात के संतो ने किया !

गुजरात के संतो की लोकभाषा के प्रति प्रीति तो थी ही इतर भाषा के प्रति आदर दिखाकर भाषा विषयक औदार्य का परिचय दिया ! इस तथ्य का प्रमाण है मध्यकाल का विपुल हिन्दी साहित्य जो गुजरात के संत भक्तो द्वारा रचा गया है ! प्रजा के धार्मिक संस्कार बनाए रखने के लिए पौराणिक आख्यान आधारित माणभट्टों का साहित्योपदेश माध्यम बना ! इसके साथ ही प्रजा के पथ प्रदर्शन के लिए संत - भक्तों ने स्वनुभव से युक्त वाग्मिता का आश्रय लिया !

नरसिंह महेता की वाणी ने ईश्वर को ब्रह्मणादि उच्चवर्ग से आगे हरिजन बस्ती तक ले जाने का कार्य किया ! १७ वी सदी के तत्वज्ञानी कवि अखा ने प्रजा के संकुचित - जड विचारों को हिला दिया ! गुजरात से मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल में चार भक्ति आन्दोलन प्रकट हुए जो आगे चलकर पुरे राष्ट्र मे विकसित हुए ! जामनगर से अद्भूत प्रणामी पंथ, सहजानंद स्वामी जो उत्तरभारत के सौराष्ट्र के गढपुर में स्थायी हुए उनका स्वामीनारायण पंथ, मोरबी के स्वामी दयानंदजी का आर्य समाजी आन्दोलन और बडोदरा में महर्षि अरविंद द्वारा प्रकटित विचारधारा अर्न्तराष्ट्रिय स्तर तक प्रसारित हुई !

भक्ति आन्दोलन के संतों का उद्देश्य - पंथ संप्रदाय के माध्यम से भारतीय सामाजिक - संस्कृतिक एकता सिद्ध करना था ! उन्होने भारतीय संस्कृति को तत्कालिन समय के अनुरुप, समाज के अनुकूल, स्वीकार्य हो एसे जीवन मूल्यों को केन्द्र में रखकर प्रस्थापित किया, जिसमे निम्न वर्ग विशेष रुप से जुडा !

व्यापक रुप से संतो की रचनाए मौखिक रुप से अधिक जिवीत है ! यह कंठस्थ परंपरा मध्यकालीन गुजराती की लिखित परंपरा से भिन्न है ! इनमें जाने माने पंथ संप्रदायो के सिवाय महापंथी, नाथपंथी, गेबीपंथी, निजारी, बीजमारगी, मारगी, सूफी, पीराणा, इसलामी, ओलिया, उगापंथी, दासपंथी, गेबीपंथी, रुखडिया के प्रर्वतक एंव अनुयायियों की भजनवाणी कंठस्थ परंपरा की समृद्ध धारा है ! प्राय; संप्रदाय की मंडलियों की प्रस्तुति द्वारा इनका संरक्षण होता रहा है !

इन भजनीक संतों मे कुछ तो घर संसारी थे जैसे मीठा, ढाढी, भोजा भगत, जीवणदास, आदि कुछ संत संसार को त्याग कर समाजाश्रित थे जैसे भाण साहेब, खीम साहेब, रवि साहेब, मोरार साहेब ! भक्ति आन्दोलन

के मशालधारी ये संत अपने संवादिता के बल पर गुरूपद प्राप्त किया ! इनमे स्त्रिया भी थी ! इन संतो की वाणी को वेदवाणी कक्षा का सम्मान प्राप्त हुआ ! साधारण जन समाज संस्कृतज्ञ नहीं था परंतु संत साहित्य के माध्यम से सरलीकृत लोकीकरण वेद-उपनिषद तत्व जानने लगा !

लोकबोली की मिठास - मार्मिकता व्यजंकता एंव वेधकता संतो की आत्मानुभूती की आवाज बनकर लोगों को प्रभावित करने लगी ! इनमे उपदेश है, चेतावनी है द्रष्टान्तों एंव रुपकों के माध्यम से की गई जीवनभीमांसा भी है ! गुजरात के कुछ संत और उनकी साहित्यिक रचनाओं के विषय में जानते है -

<u>नरसिंह महेता</u> को गुजरात का वाल्मीकि अर्थात आदिकवि माना जाता है "रास सहस्त्रपदी" नरसिंह महेता की अनुपम कृति है ! यह काव्य श्री कृष्णजी की अलौकिक रासलीला को छन्द में बांधने का अभुतपूर्व प्रयास है ! प्रस्तुत काव्य की भाषा पूर्णत; गुजराती है ! परंतु इसमें कुछ एक पद ब्रजभाषा के लिखे गए है -

" प्रेम प्रीति हरि जानी (जिनके), आए उनके पास !
भुदित भइ या भामिनी, गुण गावै नरसैयो दास "

(राम सोमरी साखी)

<u>दासी जीवन</u> के पद तथा रचनाए संख्या, व्यापकता एंव लोकप्रियता के आधार पर प्रथम स्थान के अधिकारी है ! सौराष्ट्र के भजनप्रिय जन, दासी जीवन की वाणी को 'बाईमीरा' के पदों के जैसे प्रसन्नता से गातें है ! आश्चर्य है कि बहुत से श्रोता एंव कुछ गायक भी दासी जीवण को स्त्री संत मानतें है ! कबीर पंथी होते हुए भी राधा की विरहावस्था को इतनी मार्मिकता से व्यक्त किया है कि मन वेदना से भर उठता है ! संत जीवणदास के प्रति लोक मान्यता है कि " जीवण जग में जागिया, नरमाथी थया नार दासी नाम दरसावियु, ए राधा अवतार " गोपीभव की प्रमुख रचनाएं -

" जप तप तीरथ जीवणा, पूजा पाती प्रेम !
संत संगत हरिभक्ति बिन ! उर न दूजो नेम "

<u>गंगासती</u> का जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ था ! माना जाता है कि भोजा भगवत के शिष्य रामेतवन की शिष्या थी ! दहेज में वह अपने साथ पानबाई को ससुराल ले आई थी ! उनके पति के सामने भक्ति की कसौटी का विकट समय आया तो चमत्कार हुआ ! उसे लेकर गंगा के पति को व्यक्ति पूजा की चिन्ता हुई, उन्होने समाधि लेने का संकल्प लिया ! गंगा सती भी साथ ही समाधि लेने को तैयार हुई ! परंतु पति ने आज्ञा दी , " ब्यावन दिन पानबाई को अपनी भजनवाणी की रचना से महामार्ग का पूर्ण उपदेश देने के बाद समाधी ले ! " तब गंगाबाई ने भक्ति के पथ पर चलने के लिए शील, सत्संग, गुरु उपासना, वृतिविराम, मित व्यवहार एंव योगिक क्रिया आदि सोपानों का दर्शन कराने वाले पद अपनी शिष्या पानबाई को सुनाया एंव सद्ष्टांत प्रयोग कर सिद्धि प्राप्त करवाई ! गंगासती के सभी पद पानबाई को संबोधित करके रचे गएं है ! शिष्या को परमपंथ दर्शाकर गंगासती ने प्राण त्याग दिया! कुछ पदों में " गंगासती प्रतापे पानबाई बोलिया " उक्ति है जिनमें पानबाई ने सिद्धि प्राप्त करने के बाद अपने गुरु गंगासती के प्रति आदर व्यक्त किया है जो गुरु की महिमा दर्शाता है ! उनके प्रसिद्ध पदों में -

मेरु रे डगे पण जेनां मननों डगे, भलेरे भांगी रे पडे भरमांड रे, विपद पडे पण वण से नहीं,
इ तो हरिजननां परमाण रे, भगति करो तो एवी रीते करजों पानबाई राखजो वचनुं मा' विशवास रे .....मेंस रे ...

(मरने - चाहे, भले, भरंमांड = ब्रहमान्ड)

ज्यांरे जोवे त्यां हरि हरि भलया रस तो पीधो अगम अपार रे !
एक नवधा भक्ति साधतां मली गयो तुरियामां तार रे !
गंगासती प्रतापे पानबाई बोलिया ने कीधो भूल अविद्यानो नाश रे !

सती जब, स्वधाम पधारी तब पहले पानबाई को अफसोस हुआ पर भूल तत्व का विचार करके आनन्द उपजा हानि लाभ की कल्पना मिट गई और चित्र में ब्रहमानंद खिल उठा !

स्त्री संत तोरल ने लुटेरे जेसल जाडेजा के संग जाकर उसका मद-गर्व खंडन किया ! बीच समंदर में उछलती लहेरों के बीच जब नाव डूबने लगी थी तब तोरल ने जेसल को मानवजीवन का रहस्य समझाया - " पाप तारु परकाश जाडेजा धरम तारो संभाल रे, तारी बेडली ने बुडवा नही दउँ " ! " एम तोरल कहे छे जी " यह संवादात्मक पद भावपूर्ण ढंग से आज भी गाया जाता है !

शेख सादिक अली का जन्म दाउदीव्होरा जाति में सूरत में हुआ था ! उन्हे गुजराती के साथ - साथ फारसी का भी ज्ञान था ! उनके सेवाभाव एंव सादगी की कई कहानिया प्रचलित है ! उन्होने डेढ सौ नसीहतें अर्थात बोध उपदेश लिखे जिनमें कुछ अभी भी अप्रकाशित है यह पद भजन से मिलता-जुलता स्वरुप है ! गुजरातमें धर्मान्तरित प्रजा के साहित्य का कंठस्थ परंपरा मे अधिक महत्व है ! गुजरात में ब्राहमण जाती से धर्मान्तरित प्रजा व्होरा, लोहाणा से खोजा, क्षत्रिय से मोलेसलाम, एंव कणबी - किसान से धर्मान्तरित प्रजा मुमना नाम से विधमान है ! ये मूलतः हिन्दू गुजराती है ! इनमें इस्लामी प्रभाव कम और हिन्दू प्रभाव अधिक मात्रा में पाया जाता है !

शेख सादिक अलि की नसीहतों में ईश्वर परम तत्व के नाम स्मरण की महिमा, उनकी शरण, खुदा-ईश्वर पर श्रद्धा आदि के विषय है -

आकाश हिदायतना वरसे छे भरी लेजे
हिरदाना चमन अन्दर हरियाली करी लेजे
सदगुरु जे फरमावी गया ते लिख,
ते लिख हरदानी तख्तीमा,
खैर जो चाहे तो खैर नथी कई आ दुनियानी विनतीमां !

अन्य मुस्लिम संत मामद एक शिकारी थे ! उनका "मामद मुक्तामणिं " संग्रह भजनो की रचनाएं हैं ! कहते है " मन रुपी मृग ने मारो हवे " ! एसी परंपरा में मामदशा के गुरु सूफी अशरफ मियां, विलायत, साईवली और नानकशा के प्रदान का गुजराती ज्ञानमार्गी काव्यधारा में महत्वपूर्ण स्थान है ! मामदीश गातें है -

साब रे सोनानी काया कोटडी रे, लोहे जड्यां रे कमाड रे,
लावो रे कुचियुं रे तालां खोलिए रे, खेलनहारो हुंशियार रे !

संतों के जीवन में मानव सेवा के साथ प्राणीमात्र के प्रति दया- करुणा, वात्सल्य की भावना बहती रही है ! डाडा मेकण के कुत्ते एंव गधा - लालिया और मोतिया ने सुखे रण भूमी में न जाने कितने ही प्यासे मुसाफरों के प्राणो की रक्षा की है ! भाण साहेब ने जब जिवीत समाधी ली तब उनकी घोडी और कुत्ते ने भी उनके साथ ही अपने प्राणों को त्याग दिया !

आज भी सौराष्ट्र के गांवो में, दूज, एकादशी, पूर्णमासी या व्रत उत्सव पर्व पर संत साहित्य संगीतमय स्त्रोत रुप में बहता है !

गुजरात में राम कबीर संप्रदाय के प्रचार - प्रसार में दो प्रतापी संतों का उल्लेख अनिवार्य है ! प्रथम जीवणजी महाराज, जिनका उल्लेख आगे भी किया गया है और दूसरे हैं भाण साहब तथा रविसाहब इनके जो अनुयायी बने इनकी अलग-अलग शाखाएं बनी ! जीवणजी महाराज के अनुयायी " उदापंथी " कहलाए तथा भाण तथा रविसाहब के अनुयायी " रविभाण संप्रदायी " कहलाए ! इन दोनों सप्रंदायों में किसी प्रकार के दिखावे या पूजा-पाठ को महत्व नहीं दिया जाता है ! अतः इन संतों द्वारा रचित साहित्य समाज के हितार्थ, लोक उद्धार और धर्म समन्वय की भावना से ओत - प्रोत है -

जप-तप तीरथ जीवण ! पूजा पाती प्रेम !
संत संगत हरी भक्त बिन ! उर न दूजो नेम !!

मध्यकालीन गुजराती साहित्य के अग्रगण्य कवि अखा का नाम बडे भक्तिभाव से लिया जाता है ! गुजरात के वेदान्तिक कवियों के अंर्तगत अखा सर्वश्रेष्ठ माने जाते है ! स्व भाषा गुजराती में रचना करने के साथ - साथ अखा ने हिन्दी भाषा में भी पदों, सवैयों, तथा विपुल परिमाण में साखियों की रचना की है !

"संतप्रिया " और " ब्रह्मलीला " उनकी प्रतिष्ठीत कृतियाँ है ! अखा की गुजराती कृतियों में साखिया पद, छप्पा, सोरठा आदि मुक्त काव्यात्मक रचनाओं के अतिरिक्त प्रबन्धात्मक कृतियों में अनुभव बिन्दु, चित्त-विचार संवाद, गुरु शिष्य संवाद, अखेगीता आदि विशेष उल्लेखनीय है !

प्रीतम का जन्म खेडा जिलें के बावला गांव मे हुआ था ! मध्यकाल के एक विशिष्ट लोकानुरागी, त्यागी भक्त कवि थे ! आमरण साधु जीवन व्यतीत करने वाले वेदान्ती योगमार्ग के अध्येता भक्त थे ! अतः उनकी रचनाओं मे वेदान्त-ज्ञान की बाते, भक्तिबोध और वैशम्य के उपदेश के साथ - साथ सर्व धर्म समभाव का उपदेश देखने को मिलता है ! प्रीतमने निर्गुण सगुण दोनों का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है ! इनके द्वारा रचित ग्रंथों में "सरसगीता " उल्लेखनीय है ! इसे " भ्रमरगीता " भी कहा जा सकता है ! विरहातुर गोपियां उद्धव द्वारा लाए गए कृष्ण के संदेश को समझाने में असमर्थ होने के कारण गोपियाँ कृष्ण की बाललीला को सरल तथा सरस भाषा मे सुनाती है ! इसी को आधार बनाकर 'सरसगीता ' की रचना की गई है ! प्रीतम की " सरसगीता " और दयाराम की " प्रेम सरस गीता " की विषय वस्तु एक है ! परंतु निरुपण शैली भिन्न है! दयाराम ने भी गुजरात के कृष्ण भक्ति विषयक रचनाए रचकर संत साहित्य भंडार को समृद्ध किया है !

राजे भगत एक सच्चे वैष्णव भक्त थे ! इस कृष्ण भक्त ने अपने इष्ट देव के भजन पूजन और ज्ञान वैराग और प्रभुप्रेम युक्त काव्यों की रचना करने में अपना पूरा जीवन व्यतीत कर दिया !

वस्ता विश्वभंर का जन्म खंभात के सकरपुर नामक गांव में हुआ ! उन्होने रामानंद संप्रदाय के विश्वम्भरदास जी से दीक्षा ली थी ! इनकी पद रचनाएं अखो अनुभवानंद आदी के समकक्ष की मानी जाती है प्रेमलक्षणा भक्ति का प्रभाव इनकी रचनाओं में स्पष्ट रुप से मिलता है !

"वस्तु विलास" "अमरपुरी गीता" "वस्तुगीता" "माल" "कक्का" "गरबी" "प्रभातिया" आदि इनके प्रमुख ग्रंथ है ! उपनिषद के पूर्णमदाय को सष्ट करते हुए संत कवि लिखते है -

पूरण पूरण के प्रेम से, पूरण पूरण की छोल !
वस्ता विश्वंम्भर स्वयं भरा, एक ही झक्कम्झोल !

ज्ञान भक्ति, भाषा साहित्य तथा समन्वय की दृष्टि से मध्यकालीन गुजरात में उपलब्ध हिन्दी और गुजराती साहित्य सम्पदा निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ है इन संतों द्वारा रचित साहित्य के माध्यम से पारलौकिक ज्ञान, आत्मानुभुति की अभिव्यक्ति ही इनका प्रधान ध्येय था ! गुजरात के संतो का साहित्यिक अवदान अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य के इतिहास में उच्च स्थान पर आसनस्थ होने के लिए सर्वथा समुन्नत है !

17, जे. एम के अपर्ट्मेन्ट, एच.टी. रोड.
सुभानपुरा, बडौदा - 390023.
Mob. 9825788781
Ph.No. 0265 - 2390823
Mail Id - ranumukharji@yahoo.co.in